चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	27-10-22	2	6-8

एचएयू ने गेहूं की नई किस्म के बीज के लिए नौ कंपनियों से किया करार

किसानों की मांग को देखते हुए विवि ने उठाया कदम : कुलपति

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) की तरफ से विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 का अब प्रदेश के अलावा अन्य प्रदेशों के किसानों को भी लाभ मिल सकेगा। यह बात एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कंपनियों से समझौते के दौरान कही। उन्होंने कहा कि इस किस्म की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते इसकी मांग अन्य राज्यों में भी बढ़ती जा रही है। इसलिए अगले सीजन में भरपूर मात्रा में बीज उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए निजी क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनियों से समझौता किया है। विश्वविद्यालय की तरफ से विकसित गेहूं की किस्म डब्ल्यूएच 1270 को देश के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्र में अगेती बिजाई वाली खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के कुछ हिस्से शामिल हैं।

इन कंपनियों के साथ मिलाया हाथ

विश्वविद्यालय ने डब्ल्यूएच 1270 के बीज उत्पादन एवं विपणन के लिए उत्तम सीड्स (हिसार), मॉडल एग्रीटेक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (करनाल), कुरुक्षेत्र एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड (इंद्री), शिव गंगा हाइब्रिड सीड्स प्राइवेट लिमिटेड (हिसार), हरियाणा सीड्स कंपनी (करनाल), क्वालिटी हाइब्रिड सीड्स कंपनी (हिसार), काश्तकार सीड्स विदिशा (मध्यप्रदेश), उन्नत बीज कंपनी (सिरसा) और शक्तिवर्धक हाइब्रिड सीड्स प्राइवेट लिमिटेड (हिसार) से समझौता हुआ है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27.10.22	3	1-3

हकृवि की गेहूं की किस्म डब्ल्यू एच 1270 का बीज भरपूर मात्रा में होगा उपलब्ध : प्रो. काम्बोज

जागरण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूं की डब्ल्यू एच 1270 की उन्नत किस्म का अब हरियाणा ही नहीं बल्कि देश के अन्य प्रदेशों के किसानों को भी लाभ मिल सकेगा। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कंपनियों से समझौते के दौरान कही।

उन्नत किस्म डब्ल्यू एच 1270 की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते हुए इसकी मांग अन्य राज्यों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। इसके मद्देनजर अगले सीजन में भरपूर मात्रा में बीज उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए निजी क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनियों से समझौता किया है। उन्होंने कहा कि यह विज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भंडारण का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित गेहूं की किस्म डब्ल्यू एच 1270 को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्र में अगेती बिजाई वाली खेती के लिए अधिसूचित किया गया है।

इसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, और पश्चिमी उत्तरप्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के कुछ हिस्सों को शामिल किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किस्म डब्ल्यू एच 1270 के बीज उत्पादन एवं विपणन हेतु उत्तम सीड्स (हिसार), मॉडल एग्रीटेक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (करनाल), कुरूक्षेत्र एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड (इंद्री), शिव गंगा हाइब्रिड सीड्स प्राइवेट लिमिटेड (हिसार), हरियाणा सीड कंपनी (करनाल), क्वालिटी हाइब्रिड सीड्स कंपनी (हिसार), काश्तकार सीड्स विदीशा (मध्यप्रदेश), उन्नत बीज कंपनी (सिरसा) तथा शक्तिवर्धक हाइब्रिड सीड्स पाइवेट लिमिटेड (हिसार) कम्पनियों से समझौता हुआ है।

डब्ल्यू एच 1270 की विशेषताएं : इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बीमारियां पीला रतवा व भूरा रतवा के प्रति रोगरोधी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	27-10-22	2	7-8

एचएयू ने गेहूं बीज कंपनियों से किया समझौता

हिसार (निस) : एचएयू के कुलपति प्रो.बीआर काम्बोज ने कहा कि एचएयू द्वारा विकसित गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 की उन्नत किस्म का हरियाणा ही नहीं बल्कि अन्य प्रदेशों के किसानों को भी लाभ मिल सकेगा। गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते हुए इसकी मांग अन्य राज्यों में भी बढ़ती जा रही है। अगले सीजन में भरपूर मात्रा में बीज उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए निजि क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनियों से समझौता किया है। गेहूं बीज कंपनियों के साथ किए समझौते के लिए हुए हस्ताक्षर अवसर पर उन्होंने यह बात कही।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	27.10.22	4	4-5

हकृवि की गेहूं किस्म डब्ल्यू. एच. 1270 किस्म का लाभ अन्य प्रदेशों के किसानों को भी मिलेगा : प्रो. काम्बोज

हिसार, 26 अक्तूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूं की डब्ल्यू-एच 1270 की उन्नत किस्म का अब हरियाणा ही नहीं, बल्कि देश के अन्य प्रदेशों के किसानों को भी लाभ मिल सकेगा। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कंपनियों से समझौते के दौरान कही। उन्नत किस्म डब्ल्यू-एच 1270 की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते हुए इसकी मांग अन्य राज्यों में भी लगातार बढ़ती जा रही है।

» निजी क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनियों से किया समझौता

इसके मद्देनजर अगले सीजन में भरपूर मात्रा में बीज उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यावसायीकरण को बढ़ावा देते हुए निजी क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनियों से समझौता किया है। उन्होंने कहा कि यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है, जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है।

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता

विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित गेहूं की किस्म डब्ल्यू-एच 1270 को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्र में अगेती बिजाई वाली खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। इसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और पश्चिमी उत्तरप्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के कुछ हिस्सों को शामिल किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27.10.22	4	C-5

एचएयू का 1270 गेहूं अब एमपी में भी जाएगा, नौ कंपनियों से किया करार

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू हिसार द्वारा विकसित गेहूं की डब्लयूएच 1270 की उन्नत किस्म का बीज अब हरियाणा ही नहीं बल्कि मध्य प्रदेश के किसानों को भी उपलब्ध होगा। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते हुए इसकी मांग अन्य राज्यों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। इसके मद्देनजर अगले सीजन में भरपूर मात्रा में बीज उपलब्ध कराने के लिए विश्वविद्यालय ने व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए निजी क्षेत्र की 9 प्रमुख बीज कंपनियों से समझौता किया है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के द्वारा विकसित गेहूं किस्म डब्ल्यू एच 1270 को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्र में अगेती बिजाई वाली खेती के लिए अधिसूचित किया है। इसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और पश्चिमी उत्तरप्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के कुछ हिस्सों को शामिल किया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27.10.22	4	1-6

रिसर्च • एचएयू के वैज्ञानिकों ने तैयार की खाद, हर जिले के किसान सेवा केंद्र पर 10 रुपए में प्राप्त कर सकते हैं बोतल

फसलों को रोगों से बचाकर 15 प्रतिशत पैदावार बढ़ाएगी जीवाणु खाद

महबूब अली | हिसार

प्रदेश के किसान विभिन्न फसलों में एचएयू द्वारा तैयार किए गए जीवाणु खाद का प्रयोग कर विभिन्न फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी व उन्हें रोगों से भी बचा सकते हैं। एचएयू द्वारा तैयार किए गए जीवाणु खाद राइजोटिका, अजोटिका, फास्फोटिका और बायोटिका का प्रयोग कर 15 प्रतिशत तक अधिक फसलों की पैदावार पाई जा सकती है। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज का कहना है कि जीवाणु खाद की डिमांड प्रदेश में बढ़ रही है। 10 रुपए में जीवाणुओं की बोतल को प्रत्येक जिलों के किसान सेवा केंद्रों से भी प्राप्त किए जा सकते हैं।

काम्बोज के अनुसार, रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशक दवाइयों के दीर्घकालिक उपयोग के सभी नकारात्मक प्रभावों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया है। इसमें रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाओं, वृद्धि हार्मोन का प्रयोग करने की बजाय फसल अवशेष, जैविक खाद, केंचुआ खाद, जीवाणु खाद इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। मिट्टी की उर्वरता पर स्थायी प्रभाव के साथ जीवाणु खाद को स्थायी कृषि उत्पादन के लिए जैविक खेती का महत्वपूर्ण घटक माना जाता है।

यह है जैव उर्वरक/जीवाणु खाद

जैव उर्वरक उत्पादन और प्रौद्योगिकी केन्द्र के प्रभारी डॉ बलजीत सिंह सहारन ने बताया कि जीवाणु खाद में लाभदायक जीवाणु होते हैं,जो मृदा की गुणवत्ता को बढ़ाकर पौधों की वृद्धि को बढ़ावा देते हैं। जैव उर्वरक प्रकृति में पर्यावरण के अनुकूल, गैर विषैले और गैर-खतरनाक होते हैं। वे मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं तथा रसायनों के उपयोग को कम करके पर्यावरण के प्रदूषण को कम करते हैं। जैव उर्वरक का उपयोग बीज, पौधे जड़, मृदा उपचार के लिए किया जाता है। जीवाणु खाद वायुमंडल में उपस्थित नाइट्रोजन को पौधों की जड़ों को ग्रहण करने योग्य बनाते हैं।

जैव उर्वरक/जीवाणु खाद की प्रयोग विधि

माइक्रोबायलॉजी विभाग के वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार ने बताया कि बीज उपचार के लिए 250 मिलीलीटर गर्म पानी में 50 ग्राम गुड़ का घोल बना लें, जो बीज के लिए चिपचिपा पदार्थ के रूप में उपयोग किया जाता है। बीज पर इस घोल को डालें और दोनों हाथों से रगड़ कर मिला लें। जैव उर्वरक डालें और अच्छी तरह मिलाएं। बीज को छोरी पर हवा में सुखा कर बोया जा सकता है। बीज टीकाकरण की पूरी प्रक्रिया में 2 घंटे लगते हैं। धान तथा सब्जी की फसलों उर्वरकों द्वारा उपचार किया जाता है।

जैव उर्वरकों/जीवाणु खाद के उपयोग के लाभ

- जैव उर्वरकों के प्रयोग से फसल की उपज में 5-15 प्रतिशत की वृद्धि होती है।
- जैव उर्वरकों के प्रयोग से 20-25 प्रतिशत रसायनिक खाद की बचत कर सकते है।
- जैव उर्वरक विभिन्न वृद्धि हार्मोन प्रदान करते हैं और पौधों को रोग जनकों से बचाते हैं।
- जैव उर्वरकों के प्रयोग से बीज के अंकुरण में भी वृद्धि होती है।
- किसानों को यह जीवाणु खाद उर्फ टीका 50 मि.ली. की बोतल में 10 रुपए पर यूनिट के हिसाब से उपलब्ध करवाया जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	26.10.22	----	----

हिसार:एचएयू की गेंहू किस्म डब्लयूएच 1270 का बीज भरपूर मात्रा में होगा उपलब्ध:कुलपति

26 Oct 2022 20:08:49

विश्वविद्यालय ने उठाया अहम कदम, नौ नामी कंपनियों से किया समझौता

हिसार, 26 अक्टूबर (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 की उन्नत किस्म का अब हरियाणा ही नहीं बल्कि देश के अन्य प्रदेशों के किसानों को भी लाभ मिल सकेगा। इससे किसानों को लाभ होगा और उन्हें दूरदराज नहीं भटकना पड़ेगा।

यह बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बुधवार को कंपनियों से समझौते के दौरान कही। उन्होंने कहा कि उन्नत किस्म डब्लयूएच 1270 की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते हुए इसकी मांग अन्य राज्यों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। इसके मद्देनजर अगले सीजन में भरपूर मात्रा में बीज उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए निजी क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनियों से समझौता किया है।

यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है।

विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित गेहूं की किस्म डब्ल्यूएच 1270 को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्र में अगेती बिजाई वाली खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। इसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के कुछ हिस्सों को शामिल किया गया है।

इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बीमारियां पीला रतवा व भूरा रतवा के प्रति रोगरोधी है।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर

26 Oct 2022

कैथल: प्रशास

26 Oct 2022

कैथल: प्रशास

26 Oct 2022

कैथल: पंचायत

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	26.10.2022	--	--

हकृवि की गेंहू किस्म डब्लयू एच 1270 का बीज भरपूर मात्रा में होगा उपलब्धः कुलपति

नभ-छोर न्यूज ⏭ 26 अक्टूबर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेंहूं की डब्लयू एच 1270 की उन्नत किस्म का अब हरियाणा ही नहीं बल्कि देश के अन्य प्रदेशों के किसानों को भी लाभ मिल सकेगा। ये बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कंपनियों से समझौते के दौरान कही। उन्नत किस्म डब्लयू एच 1270 की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते हुए इसकी मांग अन्य राज्यों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। इसके मद्देनजर अगले सीजन में भरपूर मात्रा में बीज उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए निजि क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनियों से समझौता किया है। उन्होंने कहा कि यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित गेहूं की किस्म डब्ल्यू एच 1270 को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्र में अगेती बिजाई वाली खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। इसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और पश्चिमी उत्तरप्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के कुछ हिस्सों को शामिल किया गया है। इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बीमारियां पीला रत्तवा व भूरा रत्तवा के प्रति रोगरोधी है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किस्म डब्ल्यू एच 1270 के बीज उत्पादन एवं विपणन हेतु अनेक कम्पनियों से समझौता हुआ है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	26.10.2022	--	--

हकृवि की गेंहू किस्म डब्ल्यूएच 1270 का बीज भरपूर मात्रा में होगा उपलब्ध

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कंपनियों से समझौते के दौरान कही यह बात

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेंहूं की डब्लयू एच 1270 की उन्नत किस्म का अब हरियाणा ही नहीं बल्कि देश के अन्य प्रदेशों के किसानों को भी लाभ मिल सकेगा। ये विचार कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कंपनियों से समझौते के दौरान कही। उन्नत किस्म डब्ल्यू एच 1270 की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते हुए इसकी मांग अन्य राज्यों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। इसके मद्देनजर अगले सीजन में भरपूर मात्रा में बीज उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए निजि क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनियों से समझौता किया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ गेहू की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम सदस्य व अन्य अधिकारी।

नौ कंपनियों के साथ हुआ समझौता : विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किस्म डब्ल्यू एच 1270 के बीज उत्पादन एवं विपणन हेतु उत्तम सीड्स (हिसार), मॉडल एग्रीटेक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (करनाल), कुरूक्षेत्र एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड (इंद्री), शिव गंगा हाइब्रिड सीड्स प्राइवेट लिमिटेड (हिसार), हरियाणा सीड कंपनी (करनाल), क्वालिटी हाइब्रिड सीड्स कंपनी (हिसार), काश्तकार सीड्स विदीशा (मध्य प्रदेश), उन्नत बीज कंपनी (सिरसा) तथा शक्तिवर्धक हाइब्रिड सीड्स पाइवेट लिमिटेड (हिसार) कम्पनियों से समझौता हुआ है।